पाठशाला

पाठशाला जाना Cool है !!
इसे छोड़ना भूल है।

हमारे पूर्व के कर्मों की वजह से कहो या बड़े बुजुर्गों का उपकार कहो, कि आज हमें जैन कुल में जन्म मिला है और हमारे आस-पास जिनेंद्र देव का आलय अर्थात जिनालय है। इसके बावजूद भी कुछ जैन लोग मंदिर नही जाते और इस जैन कुल जैसे दुर्लभ रत्न को नहीं परख पाते। जो भी नित्य देवदर्शन नही करते इसमें दोष उन लोगो का नहीं है, क्योंकि हो सकता है कि उन्हें हमारे जैसे संस्कार न मिले या जैसे हमें पाठशाला जाने जैसा स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है वैसा अवसर उनके अज्ञान के कारण उन लोगो को प्राप्त न हुआ हो और इसी की वजह से वे लोग अपने महान धर्म का महत्व नहीं जान पाए।

आज इस संसार में धर्म के संस्कारो का लोप होता जा रहा है। लौकिक पढ़ाई के लिए तो हमारे पास अनेक विद्यालय मौजूद है जिससे हम भौतिक युग में तो विकास कर रहे है

लेकिन हम उनमें अधिक तनाव, होड़, पाप-कषाय, बुरे शब्द और अनेक बुरे कार्य देख सकते हैं। क्या कभी आपने उन बच्चों में शांति, सुंदर जीवन, निर्भयता, सहानुभूति जैसे लक्षण देखे होंगे क्या?
ऐसा इसलिए है क्योंकि वे बच्चे अपने धर्म के मूल सिद्धांतों की जानकारी नहीं रखते और धर्म से विमुख होते जाते हैं।

➡ धर्मनिष्ठ संस्कारो आत्मा को पल्लवित किए बिना धर्ममय जीवन संभव नहीं।

सम्यग्दर्शन की ज्योति को विकासने में पाठशाला का विशेष योगदान रहता है। धार्मिक शिक्षा के बिना संस्कारो का शुद्धिकरण संभव नहीं। ज्ञान की प्याऊ जैसी संस्कारशाला, बच्चो को पवित्र पद पर स्थापित करती है।
सम्यग्ज्ञान की धारा से आप्लावित व्यक्ति अपने घर को प्रेम मंदिर बनाता है। जीवन जीने असली कला तो हमें संस्कार शाला - पाठशाला सिखाती है।

विद्यालय व पाठशाला ज्ञान के केंद्र होते हैं,

जीवन निर्माण की प्रयोगशाला होते हैं। मनुष्य का प्रथम निर्माण "माँ" के हाथों होता है और दूसरा निर्माण पाठशाला और विद्यालयों के शिक्षक द्वारा होता है।

हमारी जैन पाठशाला का उद्देश्य रहता है कि वे हम बच्चों को अनेक कलाएं सिखाए जैसे -

उद्देश्य

- नैतिक जीवन में सदाचार व शिष्टाचार लाना।
- धर्म के मूल सिद्धांतों का पालन करना।
- भक्ष्य - अभक्ष्य का ज्ञान करना।
- अन्याय - अनीति का त्याग करना।
- सभी जीवो के साथ एक जैसा व्यवहार करने की शिक्षा बताना है।
- माँ - बाप और गुरुजनों को सम्मान देना

पाठशाला ज्ञान की एक ऐसी फैक्ट्री है जो सच्चे संस्कारी, सदाचारी और आज्ञाकारी व्यक्तित्व का निर्माण कर एक व्यक्ति के जीवन में विशेष योगदान देती है।

जीवन के घोर अंधेरों में
प्रकाश जो बन कर आता है।
हर लेता है वो दुःख सारे
खुशियों की फसल उगाता है,
न कोई लालच करता है।
हमारे सभी संशय मिटाता है
सागर के ज्ञान सा भरा हुआ
बस वही गुरू कहलाता है!!!

एक शिक्षक अपने जीवन के अंत तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और बच्चो को सच्चा मार्ग दिखाता है इसलिए शिक्षक को उच्च दर्जा दिया जाता है। एक शिक्षक ही है जिन्हें हम माता-पिता के बराबर दर्जा देते है। एक शिक्षक का हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार रहता है। शिक्षक और विद्यार्थी का रिश्ता एक कुम्हार की तरह होता है जिस प्रकार कुम्हार साधारण मिट्टी को आकार देकर उसे बहुमूल्यवान बनाता है उसी प्रकार शिक्षक भी हमें इसी प्रकार हमें जीवन में जीने योग्य बनाता है।

एक अच्छे शिक्षक की अनेक विशेषताएँ होती जिनसे वे सबसे स्नेह और सम्मान प्राप्त करते है। पाठशाला के सभी शिक्षक हमेशा

VIJAYANT PAGE NO.: DATE:

हमें मार्गदर्शन देते हैं और हमारे सभी पाप छुड़वा कर हमें सच्ची शिक्षा देते हैं।
गुरू के कारण हम धर्म, समाज, शिक्षा और व्यापार आदि क्षेत्रों में प्रगति प्राप्त करते हैं।
पाठशाला में सेवा देने वाले सभी शिक्षक और कार्यकर्ता वर्ग को मैं खूप-खूप अनुमोदना करता हूँ।

संस्कार बिना सुविधायें पतन का कारण है।

मगर आज वर्तमान काल में पाठशाला का अधिक महत्व नहीं देख पा रहे हैं क्योंकि आज के बच्चे इन स्थानों पर जाने के लिए अधिक समय नहीं निकाल पा रहे हैं। वे अपना समय लौकिक शिक्षा, खेल-कूद, मोबाईल आदि में ही निकाल देते हैं।
इसलिए हमें आज के समय में बच्चों रूचिपूर्वक और प्रैक्टिकल तरीके से पढ़ाना चाहिए। हमें ऑनलाइन क्लासिस के द्वारा बच्चों को पढ़ाना चाहिए जिससे जिन बच्चों के घर के आस-पास पाठशाला न हो वे लोग

VIJAYANT
PAGE NO.:
DATE:

भी इस तरीके से पढ़ सकेगे। और हमें नए-नए आकर्षक तरीके से बच्चो को पढ़ाना चाहिए।

> पहले साधन नही थे लेकिन साधना थी और अब साधन तो बहुत है मगर लोगो में साधना नहीं है।

हमें बच्चों को कथानियों से (प्रथमानुयोग) धर्म में आरंभिकता करानी चाहिए। जिससे धीरे-धीरे उनके अंदर की जिज्ञासा उत्पन्न हो।

धन्यवाद